संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

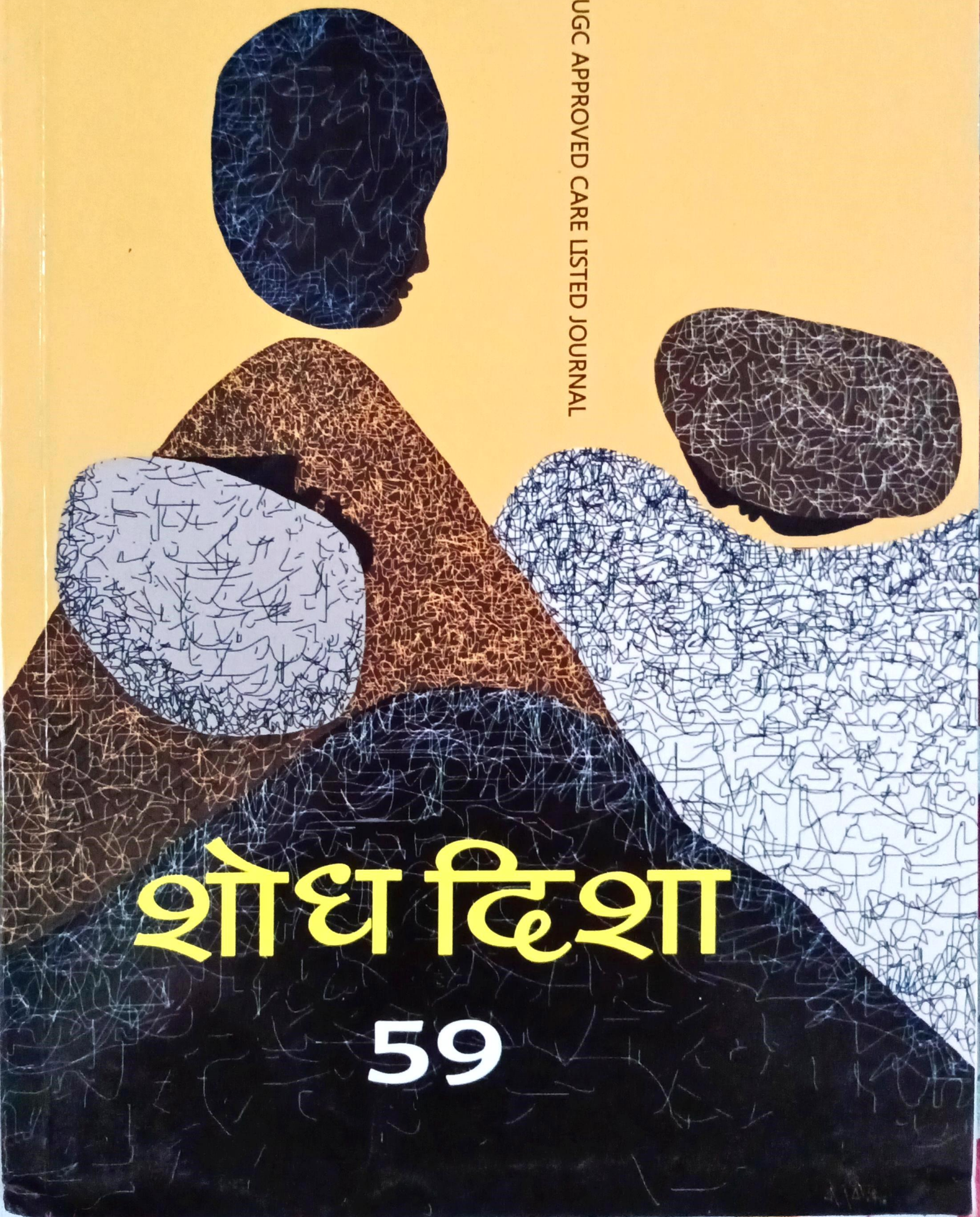



# शोध दिशा

## 59

'मैं जनकनंदिनी' उपन्यास में चित्रित आधुनिक सीता का स्वरूप/ **पूजा बरुवा** 127
यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष/ **रीतू रानी** 134
सिनेमा में हिंदी का स्वरूप/ **सिमरन सुहाग** 138
गोदान उपन्यास में ग्राम और नगर जीवन का द्वंद्व/ **सुनीता** 142
अकर्मक रंजक क्रियाएँ : सहप्रयोगात्मक संबंध/ **डॉ॰ वीणा गांधी** 147
महेश दिवाकर के काव्य में सामाजिक यथार्थ/ **डॉ॰ सुनील कुमार** 155
किसान जीवन वर्सेस बाजारीकरण/ **डॉ॰ सविता प्रमोद** 161
मीरा की भक्ति-भावना/ **डॉ॰ चंद्रकांत सिंह** 167
'ब्रह्मपुत्र' उपन्यास में नारी के विविध रूप/ **डॉ॰ माया सगरे-लक्का** 174
प्रकाश मनु के काव्य में बाल-असंतुलन : एक विश्लेषण/ **पूजा रानी** 179
हिंदी साहित्येतिहास लेखन-परंपरा/ **डॉ॰ नीरज शर्मा** 183
भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' में त्रासदीय यथार्थ/ **मोनिका** 188
वाल्मीकि रामायण में प्राकृतिक पर्यावरणीय चेतना/
**प्रो॰ संगीतासिंह विद्यालंकार, सोनम** 192
ग्रहों का वैज्ञानिक स्वरूप/ **डॉ॰ भगवानदास जोशी** 196
फणीश्वरनाथ रेणु के कथासाहित्य में राष्ट्रबोध/ **डॉ॰ बाबू राम** 202
स्त्री-संघर्ष की महागाथा : मृदुला गर्ग का कठगुलाब/ **डॉ॰ अर्चना यादव** 208
'द्रौपदी' का ध्येय वाक्य : एक विश्लेषण/ **पी॰ अंजली** 215
वैदिक वाङ्मय में वर्णित भारतीय संस्कृति/ **डॉ॰ जयन्ती सिंह** 220
महाकवि निराला की 'कुकुरमुत्ता' कविता : एक नई दृष्टि/ **कपिल शर्मा** 223
संत कबीर के विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता/ **डॉ॰ मीनू देवी** 227
उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दीवारें' में नारी-चेतना/
**डॉ॰ नंदिनी चौबे** 231
आदिवासी कहानियों का सामाजिक संदर्भ/ **डॉ॰ निशा वालिया** 236
प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा जी के कहानी-संग्रह 'दीवार में रास्ता' में
नारी-पात्र/ **उधम सिंह** 241
उपनिषदों में निहित राष्ट्रिय चेतना/ **डॉ॰ लज्जा भट्ट** 246
'धार' उपन्यास की नायिका मैना के व्यवहार का अभिप्रेरणात्मक पक्ष/
**डॉ॰ निशा शर्मा** 250
गुरु नानक कृत 'बाबरवाणी'/ **डॉ॰ रविन्द्र गासो** 256
डॉ॰ राही मासूम रजा के सीन-75 उपन्यास में चित्रित समस्याएँ/ **शांति प्रभा** 264
सुधा ओम ढींगरा के कहानी-संग्रह 'कमरा नंबर 103' में मानव-जीवन-संत्रास
एवं विडंबनाएँ/ **योगेन्द्र सिंह, प्रो॰ नवीनचंद्र लोहनी** 269
छायावादी काव्य में लोकोन्मुखी प्रवृत्ति/ **डॉ॰ सुमन सिंह** 279
युगपुरुष श्रीनारायण गुरुदेव की रचनाओं की प्रासंगिकता/ **डॉ॰ वीणा जे** 287

 ISSN 0975-735X

# मीरा की भक्ति-भावना

**डॉ॰ चंद्रकांत सिंह**
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर-एक, धर्मशाला (काँगड़ा) हि॰प्र॰ 176215

मीरा भक्तिकाल की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में अनूठी भाव-संवेदना दृष्टिगत होती है। मीरा ने सामाजिक रूप से एकांतिक जीवन का निर्वाह किया और इस एकांत-प्रवास ने उनकी काव्य-यात्रा को अद्‌भुत ऊँचाई देने का कार्य किया। समाज की जड़ताओं पर प्रहार करते हुए, अंदर एवं बाहर की दुविधाओं का प्रतिकार करते हुए मीरा ने एक ऐसी जगह निर्मित की जिसे कोई भी विषम स्थिति आहत नहीं कर सकती थी। उनकी कविता चीख-पुकार की कविता नहीं है बल्कि भक्ति में डूबे हुए हृदय की आकुल गाथा है जिसमें अपने प्रियतम के सान्निध्य को प्राप्त करने का सुखद बोध है।

भक्तिकालीन काव्यधारा में मीरा की कविता का अपना वैशिष्ट्य है। उनकी कविता सूर, कबीर एवं तुलसी की कविता से कई मायनों में विलग है। चूँकि मीरा एक स्त्री हैं इसलिए उनके काव्य में स्त्रीगत भाव-सुषमा दिखती है। स्त्रीगत तरलता के कारण उनकी कविता तल्लीनता, समर्पण एवं आत्म निवेदन की कविता है। भक्ति की दृष्टि से देखें तो मीरा की कविता को उच्चतम पराकाष्ठा की कविता कहा जा सकता है, जहाँ भक्त एवं परमात्मा का एकांतिक मिलन है।

मीरा की भक्ति चेतना कृष्ण की रूप-माधुरी से ओत-प्रोत है। कृष्ण से जुड़ी हर घटना का क्रमिक उल्लेख करती हुईं मीराबाई अपने गीतों के सहारे कृष्ण के समक्ष अपना हृदय अर्पित करती हैं। उनकी कविता को भक्त के हृदय-दान की कविता कहा जा सकता है, जहाँ प्रभु की लीलाओं का रस परिपाक करने के साथ आत्ममुक्ति की भावना का अभीप्स महत्त्वपूर्ण है। अपनी पदावली के द्वारा मीरा ने प्रभु की लीलाओं का केवल कीर्तन-गान भर नहीं किया अपितु उनकी कृपा प्राप्त करने एवं इस जीवन को विराट-उत्सव की तरह जीने की अभिलाषा भी व्यक्त की। उनकी कविताओं के मर्म का उद्‌घाटन करते हुए डॉ॰ रामचंद्र तिवारी जी कहते हैं कि 'कृष्ण का नाम स्मरण, गुण-कीर्तन, रूप-माधुरी का चित्रण, मिलन की अभिलाषा, थोड़े से संक्षिप्त मिलन-संदर्भ, कृष्ण की लीलाभूमि वृंदावन का वर्णन, विनय, कृपा प्राप्ति के प्रति विश्वास, कुछ पौराणिक और ऐतिहासिक भक्तों के अकृत्रिम प्रेम का स्मरण तथा वियोग-दशा के चित्र, पूरी पदावली के यही वर्ण्य विषय हैं।'[1]

मीरा की कविता को मात्र भावउद्वेलन की कविता नहीं कह सकते। जीवन का निचोड़, जीवन का सारगर्भित अर्थ यहाँ परिलक्षित होता है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। मध्यकालीन दौर सामंतीय था; जहाँ व्यक्ति की इयत्ता और गरिमा धूमिल हो रही थी। ऐसे विषम समय में स्त्री-जीवन की भला क्या कल्पना की जा सकती है। स्त्री को महज देह समझने वाले परिवेश में मीरा के लिए भक्ति का मार्ग अत्यंत कठिन एवं दुरूह था। किंतु मीरा ने सत्य के रास्ते